

मङ्गलम्

उपनिषदः वैदिकवाङ्मयस्य अन्तिमे भागे दर्शनशास्त्रस्य सिद्धान्तान् प्रकटयन्ति। सर्वत्र परमपुरुषस्य परमात्मनः महिमा प्रधानतया गीयते। तेन परमात्मना जगत् व्याप्तम् अनुशासितं च अस्ति। स एव सर्वेषां तपसां परमं लक्ष्यम्। अस्मिन् पाठे परमात्मपरा उपनिषदां पद्यात्मकाः पंच मंत्राः संकलिताः सन्ति।

संस्कृत शब्द	व्याकरण पद विन्यास	हिंदी अर्थ
वैदिकवाङ्मयस्य	षष्ठी ,एकवचन	वैदिक साहित्य के
अन्तिमे भागे	सप्तमी, विशेषण विशेष्य	अंतिम भाग में
दर्शनशास्त्रस्य	षष्ठी ,एकवचन	दर्शन शास्त्र के
प्रकटयन्ति	धातु, लट्, बहुवचन	प्रकट करते हैं
सर्वत्र	अव्यय	सब जगह
परमपुरुषस्य परमात्मनः	षष्ठी विशेषण विशेष्य)	परम पुरुष परमात्मा की
प्रधानतया	तृतीया	प्रधानता से
तेन परमात्मना	तृतीया विशेषण विशेष्य	उस परमात्मा के द्वारा
स	तत् , प्रथमा एकवचन	वह
एव	अव्यय	ही
च	अव्यय	और
सर्वेषां तपसां	तत् षष्ठी , बहुवचन	सभी तपस्याओं
परमं लक्ष्यम्	द्वितीया एकवचन	अंतिम लक्ष्य
अस्मिन् पाठे	सप्तमी, विशेषण विशेष्य	इस पाठ में
मंत्राः संकलिताः	प्रथमा बहुवचन	मंत्र संकलित हुआ
सन्ति	अस् धातु, लट्, बहुवचन	हैं

उपनिषद वैदिक साहित्य के अंतिम भाग में दर्शन शास्त्र के सिद्धांतों को प्रकट करते हैं। सभी जगह परम पुरुष परमात्मा की महिमा प्रधानता से गाया गया है। उसी परमात्मा के द्वारा संसार निर्मित और नियमित है। सभी तपस्याओं का अंतिम लक्ष्य वहीं है। इस पाठ में परमात्मा की प्राप्ति हेतु उपनिषद के पाँच मंत्र श्लोक के रूप में संकलित हैं।

मङ्गलम् पाठ परिचय का अभ्यास

Join Online Learning Program/Whatsapp 6203637662 Install BSEB Learning App

❀ श्लोक 01 ❀

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य अपिहितं मुखम् ।

तत् त्वम् पूषन् अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥

यह ईशोपनिषद् की पन्द्रहवीं श्रुति/मंत्र बृहदारण्यकोपनिषद् के अध्याय 5 ब्राह्मण 15 मंत्र 1 में है और शुक्लयजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 17 में भी है ।

ईशावास्य उपनिषद् :- (परिचय) यजुर्वेद मुख्यतः दो भागों में विभक्त हैं कृष्ण यजुर्वेद जो दक्षिण भारत में प्रसिद्ध रहा जबकि शुक्ल यजुर्वेद उत्तर भारत में महत्वपूर्ण हैं। शुक्ल यजुर्वेद के अंतिम 40 वें अध्याय के प्रथम श्लोक से 18 वें श्लोक तक को ही ईशावास्य उपनिषद् कहते हैं क्योंकि अन्य सभी उपनिषदों की उत्पत्ति वेदों की रचना के उपरांत हुई हैं लेकिन ईशावास्य उपनिषद् की रचना वेदों में ही हो गयी इसलिए इसे ही सबसे पहला उपनिषद् मानते हैं । ईशावास्य में कुल 18 श्लोक हैं। विश्वविख्यात गायत्री मंत्र (३६.३) तथा महा मृत्युंजय मंत्र (३.६०) इसमें है।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य अपिहितं मुखम् ।

तत् त्वम् पूषन् अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥१५॥

[✓ CLICK & READ PAGE 12 ईशावास्य उपनिषद् 15](#)

अन्वय (पूषन्) हे सब आश्रितों का भरण-पोषण करने वाले सूर्य (हिरण्मयेन) ज्योतिर्मय (पात्रेण) पात्र से (सत्यस्य) सत्यस्वरूप का (मुखम्) श्रीमुखारविन्द (अपिहितम्) ढका हुआ है (सत्यधर्माय) सत्य परब्रह्म के उपासक मेरे लिये, मुझ सत्यधर्मा के लिये (दृष्टये) अपना दर्शन कराने के निमित्त, अपना दर्शन कराने के लिये (त्वम्) तुम (तत्) उस को (अपावृणु) हटा दो ।

अर्थ- हे प्रभु ! सत्य का मुख सोने जैसा आवरण से ढका हुआ है, मुझ सत्यधर्मा को ईश्वर की प्राप्ति के लिए उस आवरण को हटा दें ॥

व्याख्या- प्रस्तुत श्लोक 'ईशावास्य उपनिषद्' से संकलित तथा मङ्गलम पाठ से उद्धृत है। इसमें सत्य के विषय में कहा गया है कि सांसारिक मोह-माया के कारण विद्वान भी उस सत्य की प्राप्ति नहीं कर पाते हैं, क्योंकि सांसारिक सुख साधनों में वह सत्य इस प्रकार ढक जाता है कि मनुष्य जीवन भर अनावश्यक भटकता रहता है। इसलिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि हे प्रभु ! उस माया से मन को हटा दो ताकि परमपिता परमेश्वर को प्राप्त कर सके।

[Join Online Learning Program/Whatsapp 6203637662 Install BSEB Learning App](#)

मङ्गलम्

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् । तत्त्वं पूषन् अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ।
पूषन्न एकर्षे यम सूर्य प्राजापत्यव्यूह रश्मीन् । समूह तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि ।
योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि । वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तः शरीरम् ।
ॐ३ क्रतो स्मर कृत स्मर क्रतो स्मर कृत स्मर । अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥ १॥

[✓CLICK & READ PAGE 255 बृहदारण्यकोपनिषद् \(अध्याय 5 ब्राह्मण 15 मंत्र 1 \)](#)

हिरण्मयेन। पात्रेण। सत्यस्य। अपिहितमित्यपिहितम्। मुखम् ॥ यः। असौ। आदित्ये। पुरुषः। सः।
असौ। अहम्। ओ३म्। खम्। ब्रह्म ॥१७॥

[अंतिम पाँचवे पृष्ठ पर देखे ✓ शुक्लयजुर्वेद \(अध्याय 40 मंत्र 17\)](#)

विशेषार्थ-हे सब आश्रितों के भरण-पोषण करने वाले परब्रह्म यहाँ 'पूषन्' पद सूर्य वाचक है। ज्योतिर्मय सूर्यमण्डलरूप पात्र से सत्य-स्वरूप परब्रह्म का मुखारविन्द ढका हुआ है सत्य परब्रह्म के मुझ उपासक के लिए अपना दर्शन कराने के निमित्त तुम उस मुखारविन्द को आवरणरहित कर दो।

इस श्रुति से 'सत्य' शब्द का अर्थ जीवात्मा होता है। संकलनार्थ यह है कि हे नारायण! सोने के समान मन लुभावने विषय रूपी माया के परदे से जीव का मन ढका हुआ है, हे सबके पोषक उस ढकन को मुझ सत्यपरायण उपासक के लिये तुम उठा दो जिससे मैं दर्शन कर सकूँ।

सत्य संज्ञक ब्रह्म का मुख ज्योतिर्मय पात्र से आच्छादित है। हे संसार का पोषण करनेवाले सूर्यदेव! तू उसे, मुझ, सत्यधर्मा को उसके दर्शनके लिये आवरण रहित कर दो। हे पूषन्! हे एकर्षे! हे यम! हे सूर्य! हे प्राजापत्य! भौतिकता के इस आडम्बर को हटा ले और तेज को समेट ले। तेरा जो अत्यन्त कल्याण मय रूप है, उसे मैं देखता हूँ। यह जो सूर्यमण्डल में स्थित पुरुष है, वही मैं अमृतस्वरूप हूँ। मुझ अमृत एवं सत्य स्वरूप आत्मा का शरीरपात हो जानेपर इस शरीरके भीतर का प्राणवायु इस बाह्यवायु को प्राप्त हो तथा यह शरीर भस्म शेष होकर पृथ्वी को प्राप्त हो। हे प्रणवरूप एवं मनोमय क्रतुरूप अग्निदेव! जो बृहदारण्यक उपनिषद स्मरण करने योग्य है, उसका स्मरण कर। मैंने जो किया है, उसका स्मरण कर। हे क्रतुरूप अग्निदेव। जो स्मरण करने योग्य है, उसका स्मरण कर; किये हुए का स्मरण कर। हे अग्ने! हमें तू कर्मफल की प्राप्ति के लिये शुभ मार्ग अर्थात् देवयान मार्ग से ले चला। हे देव! तू सम्पूर्ण प्राणियों के समस्त प्रज्ञानों को जाननेवाला है। हमारे कुटिल पापों को हमसे दूर कर। हम तुझे अनेकों बार नमस्कार करते हैं।

[Join Online Learning Program/Whatsapp 6203637662 Install BSEB Learning App](#)